13

''पवित्र लोगों की कलीसियाएं''

''ज़्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है'' (1 कुरिन्थियों 14:33)।

कई बार हम किसी वस्तु या कार्य को *गलत नाम* से पुकारते हैं, और किसी कारणवश उस गलती को कभी सुधारा नहीं जाता। बार-बार दोहराने पर वह गलती आदत बन जाती है और हम किसी वास्तविकता या विचार को गलत ढंग से इस्तेमाल करने के आदी हो जाते हैं।

उदाहरण के लिए, एक आदमी की कार का एज़्सीडेंट हो गया। उसे तो चोट नहीं लगी परन्तु उसकी कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई और चलाने के योग्य नहीं रही। पास से गुजरते हुए एक व्यज़्ति ने मुश्किल से निकालने में सहायता करने की कोशिश करते हुए दुर्घटना के शिकार आदमी से पूछा, ''ज़्या मैं रैकर (नष्ट हुई गाड़ियों को ढोने वाली गाड़ी) बुलाऊं?'' खिन्न व्यज़्ति ने कहा, ''मुझे रैकर की जरूरत नहीं है। रैक (अर्थात नाश) तो हो चुका है। मुझे एक ट्रक चाहिए जिससे मेरी टूटी हुई कार को खींचकर ले जाया जा सके!'' वह सही था, था कि नहीं? (अमेरिका में) टूटी हुई गाड़ी को उठाने वाले ट्रक को ''रैकर'' कहते हैं; परन्तु जब हम उसी ट्रक को अपनी ओर आता देखते हैं, तो हमें लगता है कि उसका यह नाम गलत रखा गया है।

भाषा के विकास में, कई बार अच्छे शज़्द का अर्थ उसके साथ इस ढंग से जुड़ जाता है जिसका वास्तव में उससे कोई सज़्बन्ध नहीं होता। यह बात हमें याद दिलाती है कि भाषा का ज्ञान अपने आप में संवाद की कला की गारंटी नहीं है। विचारों के सही आदान-प्रदान के लिए प्रयास करना आवश्यक है। उलझन की सज़्भावना के कारण, हम ''भाषा की दुर्घटनाओं'' या ''शज़्दों के फिसलने'' जैसे किसी वस्तु के लिए गलत शज़्द इस्तेमाल करना जैसी बातों से चौकस रहें और यह सुनिश्चित करें कि भाषा की इन असामान्यताओं के कारण किसी महत्वपूर्ण विषय को गलत न समझा जाए।

मन में उलझे हुए शज़्दों के इन विचारों के साथ, ''सेंट'' शज़्द पर ध्यान दें। अंग्रेज़ी की बाइबल में यह शज़्द एक सामान्य पद में बहुवचन रूप में मिलता है जिसका इस्तेमाल पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 14:33 में मसीह की कलीसियाओं के लिए किया: ''ज़्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्ज़ा है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।'' अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है: ''For God is not a God of

confusion but of peace, as in all the churches of the saints.''''द चर्चज़ ऑफ़ द सेंट्स'' पदनाम दिलचस्प और ज्ञानप्रद, आंखें खोलने वाला और कौतुहल उत्पन्न करने वाला है, जो हमें उन लोगों की पहचान की जिनसे कलीसिया बनती है, एक और झलक देता है। इस आयत के अनुसार, अंग्रेज़ी भाषा के ''सेंट'' शज़्द का बाइबल के अनुसार अर्थ समझे बिना कलीसिया की अवधारणा को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता।

शज़्द का परिचय

गलती से ''सेंट'' शज़्द का इस्तेमाल भज़्ति के लिए प्रसिद्ध किसी व्यज़्ति के लिए किया जाता है। कोई कहता है, ''वह तो सेंट है!'' यह तो वैसे ही है जैसे वह व्यज़्ति यह संकेत दे रहा हो कि किसी ने सेंट या संत कहलाने का अधिकार *कमाया* है।

इस शज़्द का प्रयोग विशेषतया उन लोगों के लिए भी किया जाता है जो दूसरों से उज़्म विश्वासी सेवा में रहते हुए मरे हों। जो लोग इस शज़्द का इस्तेमाल इस तरह से करते हैं वे उस व्यज़्ति के मरने से पहले और आधिकारिक तौर पर एक सेंट के रूप में घोषित किए जाने से पहले उसके लिए इस शज़्द का इस्तेमाल नहीं करते हैं। ''सेंट'' शज़्द के लिए ये दो अलग-अलग उपयोग बाइबल की अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए शज़्द के इस्तेमाल से मेल नहीं खाते हैं।

नये नियम के लेखकों द्वारा इस शज़्द का इस्तेमाल बार-बार केवल उनके लिए ही किया गया था ''जो मसीह में हैं''। इस इस्तेमाल का एक उदाहरण फिलिप्पियों के नाम लिखी पौलुस की पत्री में देखा जाता है। पत्री के आरज़्भ में, उसने लिखा, ''मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र लोगों [अर्थात सेंट्स] के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों और सेवकों समेत'' (फिलिप्पियों 1:1)। पत्र के अंत में, उसने कहा, ''हर एक पवित्र जन [अर्थात सेंट] को जो यीशु मसीह में है, नमस्कार कहो। जो भाई मेरे साथ हैं, तुज़्हें नमस्कार कहते हैं ...'' (फिलिप्पियों 4:21, 22)। पौलुस जिस क्षेत्र के नाम पत्र लिख रहा था, वहां के हर मसीही को वह एक पवित्र जन या सेंट मानता था और उसने नगर के हर मसीही को पवित्र जन या सेंट के रूप में देखा, जिसे वह लिख रहा था।

''सेंट'' शज़्द में ही ''पवित्र उपयोग के लिए अलग किया हुआ'' या ''परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ'' का विचार मिलता है। मसीही व्यज़्ति अपने मन परिवर्तन के समय *सैद्धांतिक तौर पर* सेंट या पवित्र जन बन जाता है ज़्योंकि सुसमाचार के द्वारा उसे परमेश्वर की सेवा के लिए अलग किया गया है। मन परिवर्तन से पहले, वह शैतान का और संसार का था, और स्वार्थी भावना से चलता था। परन्तु मन परिवर्तन से वह परमेश्वर की सज़्पज़ि या उसका जन बन जाता है (1 पतरस 2:9)।

इस सज़्बन्ध में, नये नियम में हर मसीही को सेंट या पवित्र लोग या जन कहा गया है। हमारे प्रभु ने हनन्याह को शाऊल के पास जाकर उसे यह बताने की आज्ञा दी कि उसे उद्धार पाने के लिए ज़्या करना है। हनन्याह ने आज्ञा मानकर, यरूशलेम के मसीहियों के लिए इस

पदनाम का इस्तेमाल किया: ''हे प्रभु मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इस ने यरूशलेम में तेरे *पवित्र लोगों* [अर्थात सेंट्स] के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयां की हैं'' (प्रेरितों 9:13)। पतरस की मिशनरी यात्राओं की लूका की रिपोर्ट में, उसने लुदिया में मसीह के अनुयायियों को ''पवित्र लोग'' अर्थात सेंट्स कहा: ''और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन *पवित्र लोगों* [अर्थात सेंट्स] के पास भी पहुंचा, जो लुद्दा में रहते थे'' (प्रेरितों 9:32)। रोमियों की पत्री में, पौलुस ने मसीही लोगों के जीवनों में पवित्र आत्मा के काम के विषय में लिखा, और इस सम्बन्ध में, उसने परमेश्वर के सब लोगों को सेंट या पवित्र लोग कहा: ''और मनों का जांचने वाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह *पवित्र लोगों* [या सेंट्स] के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है'' (रोमियों 8:27)। उसने कहा कि पवित्र आत्मा सब पवित्र लोगों के लिए अर्थात परमेश्वर के लोगों के लिए बिनती करता है, जिसका अर्थ यह है कि इन आयतों से पुष्टि हो जाती है कि ''सेंट'' या पवित्र लोग नये नियम का ही शब्द है जो ''मसीही'' या ''मसीह में होने वालों'' के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द के समान है।

''सेंट'' शब्द का अनुवाद हिन्दी बाइबल में ''पवित्र जन या पवित्र लोग'' किया गया है, और इसका अर्थ है ''सेंट या पवित्र जन होना'' या ''पवित्र किया जाना।'' पौलुस ने लिखा, ''पर हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो चाहिए कि तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, कि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया; कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ। जिस के लिए उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:13, 14)। विश्वासी व्यक्ति को सुसमाचार की आज्ञा मानकर मसीह में आने पर सच्चाई को मानने के कारण आत्मा के द्वारा पवित्र किया जाता है (यूहन्ना 17:17; 1 पतरस 1:1, 2)।

1 कुरिन्थियों 14:33 में ''पवित्र लोगों [या सेंट्स] की सब कलीसियाओं'' का संदर्भ भी स्पष्ट करता है कि पवित्र आत्मा ने ''पवित्र लोगों'' शब्द का इस्तेमाल कैसे किया है। यह वाक्यांश कलीसिया की आराधना सभा में पवित्र आत्मा के दानों के इस्तेमाल पर कुरिन्थुस की कलीसिया को दिए गए पौलुस के विस्तृत निर्देशों के अंत में मिलता है। जिस प्रकार हमारी बाइबल अध्यायों में बांटी गई है, उसके अनुसार आश्चर्यकर्म के दानों की चर्चा अध्याय 12 में आरम्भ करके अध्याय 14 के अंत में समाप्त हो जाती है। 1 कुरिन्थियों में यह उसकी सबसे लम्बी विषयात्मक व्याख्याओं में से एक है। ये शिक्षाएं विशेष तौर पर पहली सदी की कलीसिया को आराधना क्रमानुसार और शांतिपूर्ण ढंग से करने के निर्देश के लिए दी गई थीं।[1] क्योंकि उनकी सभाओं में अव्यवस्था और गड़बड़ी एक आम बात हो गई थी,[2] इसलिए पौलुस ने उपयुक्त आत्मिक व्यवहार के लिए उन्हें डांट लगाते हुए इस शोर शराबे को सुधारना चाहा। उसकी अपील से काफी लाभ हुआ। संक्षेप में, पौलुस ने कहा, ''परमेश्वर का प्रभाव सब कलीसियाओं में शांति का होगा न कि गडबड़ी करने वाले का'' उसकी ताड़ना ''पवित्र लोगों [या सेंट्स] की कलीसियाओं'' या ''परमेश्वर के अलग किए हुए लोगों'' के रूप में परमेश्वर की सब कलीसियाओं के लिए है।

1 और 2 कुरिन्थियों (1 कुरिन्थियों 1:2; 2 कुरिन्थियों 1:1), फिलेमोन (आयत 5), इफिसियों (1:1), फिलिप्पियों (1:1), और कुलुस्सियों (1:2) में सलाम भेजते हुए ''पवित्र लोगों'' की जगह ''कलीसिया'' शज़्द का इस्तेमाल किया गया है। जैसा कि पौलुस के पत्रों से पता चलता है कि कुरिन्थुस के मसीही लोगों में कई तरह की समस्याएं और गड़बड़ियां पाई जाती थीं; तो भी, पौलुस ने उन्हें पवित्र लोग कहा जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी बाइबलों में सेंट्स हुआ है। उसके आरज़्भिक शज़्दों से उनके मसीह में होने की झलक मिलती है, ''परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र [या सेंट्स] होने के लिए बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं'' (1 कुरिन्थियों 1:2)। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह में होने वाला कोई भी व्यज़्ति पवित्र जन या सेंट है और मसीह की कोई भी सच्ची कलीसिया पवित्र लोगों अर्थात सेंट्स का समूह ही है।

शज़्द की व्याज़्या

''पवित्र लोग'' अर्थात ''saint'' शज़्द में पाया जाने वाला विचार उन लोगों के लिए है जिन्हें प्रतिबद्धता ''के जीवन'' के लिए बुलाया गया है। पुराने नियम के इतिहास के दो चित्रों से पता चलता है कि हमें इस शज़्द के लिए कितना आभारी होना चाहिए।

परमेश्वर और इस्राएली

इस शज़्द के पीछे पुराने नियम की अवधारणा है जो विशेष तौर पर इस्राएलियों के साथ परमेश्वर के सज़्बन्ध में दिखाई देती है। पुराने नियम का सार परमेश्वर का उसके द्वारा जिसे उसने छुटकारे के अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए काम करना था, अपने लिए एक लोग चुनना है। उसने इब्राहीम को चुना और प्रतिज्ञा दी कि वह बहुतों का पिता कहलाएगा (उत्पज़ि 15:5)। उसकी वह प्रतिज्ञा इसहाक और उसके पुत्र याकूब में स्पष्ट होती है जब याकूब और उसका परिवार काफी बड़ा घराना बन गए जिनकी संज़्या पचहज़र[3] हो गई थी, वे मिसर को चले गए जहां अंत में वे निर्दयी फिरौन के गुलाम बन गए। सैकड़ों वर्ष की दासता के बाद, जैसा कि निर्गमन की पुस्तक के आरज़्भ के अध्यायों में मिलता है, वे मूल पचहज़र लोग एक बड़ी कौम बन गए थे जिनकी गिनती पच्चीस लाख से अधिक हो गई थी। इब्राहीम की संतान को संज़्या में बढ़ने की परमेश्वर की इतनी आशीष मिली कि वे गुलामी के समय इतनी तेज़ी से बढ़ने लगे कि विद्वानों के लिए आज भी वह किसी आश्चर्य से कम नहीं है। मूसा के द्वारा परमेश्वर उन्हें संताप की आग से निकालकर परमेश्वर के पर्वत अर्थात, सीनै के पास लाया जहां परमेश्वर ने उन्हें बताया कि ''अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे'' (निर्गमन 19:5, 6)।

निश्चय ही इस्राएली परमेश्वर की पवित्र प्रजा के रूप में बने नहीं रहे; परन्तु, *उनकी*

स्थिति, परमेश्वर के ''अलग किए हुए'' लोगों के रूप में थी। जब *व्यवहार में* वे उसके लोगों के रूप में रहने में असफल रहे तो परमेश्वर ने उनके पाप और विद्रोह को क्षमा नहीं किया। वह ऐसा कभी नहीं करता। पाप चाहे अपने लोगों का हो या किसी और का वह उसे नज़रअन्दाज़ नहीं करेगा। हर व्यक्ति को अपने जीवन के लिए परमेश्वर के सामने जवाब देना होगा, चाहे वह व्यक्ति परमेश्वर की वाचा में हो या उसके बाहर (2 कुरिन्थियों 5:10)। तो भी पृथ्वी के सब लोगों में से, इस्राएली परमेश्वर के लोग होने के लिए ईश्वरीय बुलाहट से बुलाए गए थे। एक अर्थ में, वे सब सेंट अर्थात पवित्र लोग थे।

परमेश्वर और लेवियों की याजकाई

''सेंट'' या ''पवित्र लोग'' से मिलने वाला संदेश मूसा के प्रबन्ध की याजकाई में भी देखा जा सकता है। पुराने नियम की याजकाई का प्रबन्ध तीन कालों में हुआ। पहले वाक़्यांश को *छुटकारे का चरण* कहा जा सकता है। वे पहलौठे जिन्हें इस्राएलियों के मिसर से निकलने के समय परमेश्वर द्वारा ''छोड़ दिया गया'' था उसके विशेष सेवकों के रूप में अलग या पवित्र किए गए थे (निर्गमन 13:11-15; गिनती 3:13)। परमेश्वर के आगे वे पवित्र थे।

इसके बाद *प्रतिस्थापन का युग* है। लेवी के गोत्र को इन पहलौठों की जगह सोने के बछड़े की घटना के समय अपनी कपटरहित निष्ठा के लिए प्रतिफल के रूप में परमेश्वर की सेवा के लिए चुना गया था(निर्गमन 32:25-29)। यह गोत्र आरम्भ में मिसर से आने वाले पहलौठे की जगह पर था; परन्तु आने वाले समय में पहलौठे नर को उनके माता-पिता द्वारा मन्दिर के भण्डार में पांच शेकेल चांदी देकर और उपयुक्त बलिदान देकर छुड़ाया जाना था।[4]

फिर *चयन का चरण* आया। लेवी के गोत्र के अम्राम के घराने को परमेश्वर द्वारा वास्तविक याजकों के रूप में चुना गया था। हारून प्रथम महायाजक और उसके पुत्र याजक बने। हारून के बेटों को वेदी में परमेश्वर की पवित्र सेवा के लिए अलग किया गया था। कोई लेवी याजक के रूप में तभी काम कर सकता था वह इस परिवार से हो। दूसरे लेवियों ने महायाजक और याजकों के सहायक के रूप में काम करना था। याजकाई आरम्भ में ठहराई गई जब हारून और उसके बेटों, नादाब, अबीहू, एलियाज़ार, इतिमार को परमेश्वर द्वारा इस्राएल द्वारा सीनै पर डेरा लगाने के समय याजक नियुक्त किया गया था (निर्गमन 28:1)। उन्हें इस पद पर लहू के द्वारा अलग किया गया था, मूसा ने उनके दायें कानों के सिरों और हाथ तथा पांव के अंगूठों पर परमेश्वर की सेवा के प्रति उनकी पूर्ण आस्था के प्रतीक के लिए में लहू लगाया था (लैव्यव्यवस्था 8:23, 24)। महायाजक के रूप में हारून का उसकी पवित्र स्थिति को दिखाने के लिए ''पवित्र तेल'' से अभिषेक भी किया गया था (लैव्यव्यवस्था 4:3, 5; 8:12)।

इस प्रकार, चुने हुए लोगों को पुराने नियम के काल में परमेश्वर के पवित्र कार्य के लिए अलग किया जाता था। उन्हें याजक कहा जाता था और परमेश्वर के सामने सेवा का विशेष स्थान दिया जाता था (निर्गमन 29:44)। उन्हें एक विशेष सम्बन्ध का सौभाग्य प्राप्त

था, परन्तु उनके लिए यह ध्यान रखना आवश्यक था कि वे अपनी बुलाहट के अनुसार परमेश्वर के सामने चलेंगे। जब नादाब और अबीहू ने बाहरी आग भेंट करके परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी, तो पवित्र या अलग किए हुए याजकों के रूप में परमेश्वर के सामने खड़ा होने के बावजूद वे मर गए (लैव्यव्यवस्था 10:1, 2)।

इस्राएल कौम और पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा चुने गए याजकों की तरह, मसीही युग में कलीसिया परमेश्वर के चुने हुए लोगों से बनती है (1 पतरस 2:9)। कलीसिया परमेश्वर की नजर में पवित्र अर्थात उसके ''अलग किए हुए'' लोगों को कहा जाता है। पतरस ने कलीसिया के विषय में कहा, ''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं'' (1 पतरस 2:5)। परमेश्वर के चुने हुओं के रूप में, कलीसिया ''पवित्र लोगों'' या ''सेंट्स'' की कलीसिया है।

एक पवित्र जन या सेंट
पाप रहित होने के अर्थ में सिद्ध नहीं है।
लेकिन पूर्णतया क्षमा किए जाने के अर्थ में वह सिद्ध है।

एक पवित्र जन या सेंट के लिए परमेश्वर के विचार का हाल ही का एक उदाहरण जैफ़री दाहमर होगा, जो इतिहास में अपनी किस्म का सीरियल किल्लर होगा। सत्रह लोगों तथा लड़कों की हत्या के इस आरोपी को आजीवन कारावास की सजा मिली थी, लेकिन फिर भी, जहां तक हम जानते हैं, वह एक सेंट अर्थात पवित्र जन बन गया।

वर्ल्ड बाइबल स्कूल के दो शिक्षकों, कर्टिस बूथ और मेरी मॉट ने टीवी पर समाचार प्रसारण में और समाचार पत्रों में जैफ़री के बारे में सुना और उन्होंने उसे वर्ल्ड बाइबल स्कूल के पत्राचार पाठ्यक्रम के बाइबल पाठ भेज दिए। जैफ़री ने मन लगाकर उन पाठों का अध्ययन किया, और दोनों को बपतिस्मा लेने की अपनी इच्छा लिख भेजी। कुछ हज़्तों में ही, 10 मई, 1994 के दिन रॉय रैटज़्लिफ़ के लिए जेल में जाकर जैफ़री दाहमर को वहां के एक जलाशय में बपतिस्मा देने के लिए भेजने का प्रबन्ध किया गया। बपतिस्मा लेने के बाद, जैफ़री रॉय के साथ हर सप्ताह अध्ययन करता था, वह मसीह में बढ़ रहा था और सेवा करने के अवसर की इच्छा करता है। 28 नवज़्बर 1994 को जैफ़री को जेल के एक बाथरूम में पीट पीटकर मार दिया गया। उसकी मृत्यु के समय की घटनाएं तो हमें मालूम नहीं, परन्तु रॉय का मानना था कि जैफ़री मौत तक मसीह के प्रति अपनी निष्ठा से नहीं फिरा था।

सुसमाचार दुष्ट से दुष्ट, भले से भले और मझौले सब तरह के लोगों के लिए मसीह में अपने मन परिवर्तन के कारण, जैफ़री दाहमर एक सेंट या पवित्र जन बन गया और मरने के समय वह सेंट ही था। अमेरिका के इतिहास में यद्यपि अधिकतर लोग उसे सबसे बड़े अपराधियों में से एक के रूप में ही याद रखेंगे, परन्तु परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह के कारण

वह अपने जीवन के अंतिम छह माह एक पवित्र जन या सेंट के रूप में रहा!

परमेश्वर *हमारे पापों में* नहीं बल्कि *हमारे पापों से* उद्धार करता है, ज़्योंकि वह हमसे उस उद्धार को पाने के लिए विश्वास और आज्ञाकारिता की मांग करता है। वह हमें हमारी गलतियों के लिए पवित्र नहीं करता बल्कि उनसे हमारा उद्धार करता है। विश्वास, मन फिराव, यीशु के अंगीकार और मसीह में बपतिस्मा लेने से मसीह में आने वाले को, वह पाप से शुद्ध करके उसे अपनी सेवा के लिए अलग करता है। एक सेंट या पवित्र जन *गलती रहित* नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से वह दोषरहित हो सकता है। एक पवित्र जन या सेंट पाप रहित होने के अर्थ में सिद्ध नहीं है। परन्तु वह सिद्धता से क्षमा किए जाने के अर्थ में सिद्ध है।

शब्द व्यवहार में लाया गया

''पवित्र लोगों की कलीसियाएं'' वाक्यांश एक बहुमूल्य शीर्षक है और कलीसिया को चाहिए कि इसे दिल से अपनाए। परमेश्वर अपने लोगों को ''पवित्र लोग'' या सेंट ही कहता है! इस पदनाम का हम पर क्या प्रभाव होना चाहिए।

हमें इसे *मानना* चाहिए। अपनी कलीसिया के लिए अपने उद्देश्य को याद करवाने के लिए परमेश्वर ने यह पहचान दी है। उसने चाहा है कि हम उसके विशेष लोग अर्थात उसकी अपनी सम्पत्ति हों। अपने आप को हमें परमेश्वर की आराधना और काम के लिए अलग किए हुए लोगों के रूप में देखना चाहिए।

इसके लिए हमें *आभारी* होना चाहिए। परमेश्वर के लोग चुने होने के सम्मान पर विचार करें। इससे अधिक प्रेरणादायक और क्या बात हो सकती है? हमारे लिए इससे उत्साहजनक शब्द और क्या हो सकता है? हमें परमेश्वर के परिवार में गोद लिया गया है (इफिसियों 1:5)। उसने अपना प्रेम हमारे मनों में डाला है और हमें अपनी मीरास बनाया है!

हमें इसे *लागू* करने की इच्छा करनी चाहिए। एक मसीही व्यक्ति का *व्यवहार* इस *स्थिति* से अर्थात उसके *व्यवहार* और उसके *विश्वास* का मेल होना चाहिए।

बहुत बार हमारा जीवन अपने लिए ठहराए ''पवित्र लोग'' शब्द के मापदण्ड के अनुसार नहीं होता। हम अपने प्रभु के चेले या शिष्य हैं (प्रेरितों 11:26), परन्तु हम हमेशा चेलों की तरह काम नहीं करते। कई बार हम मसीह की कक्षा में उसके पढ़ाते समय सुनने में धीमे, और अनुशासन में ढीले होते हैं (इब्रानियों 5:11)। हमें अपने व्यवहार को अपनी प्रतिबद्धता के साथ लाने अर्थात अपने जीवन को अपने प्रेम से मिलाने में सावधान रहना चाहिए।[6]

हर मसीही एक पवित्र जन अर्थात सेंट है, और उसके लिए उस बुलाए जाने के योग्य चाल चलने की जिसके द्वारा उसे बुलाया गया है, इच्छा करना आवश्यक है (इफिसियों 4:1)। जैसे एक देहाती व्यक्ति ने कहा कि ''पहले विश्वास करो। फिर व्यवहार करो।''

परमेश्वर हमें ''सचमुच'' में अपने लोग होने अर्थात ''पवित्र लोग'' या ''सेंट'' होने की चुनौती देता है जो नाम उसने हमें दिया है! परमेश्वर ने अपने पवित्र उद्देश्य को हमारे

अन्दर डालने के लिए हम में से हर एक का नाम ''पापी'' से ''पवित्र जन'' कर दिया है।

सारांश

परमेश्वर अपनी कलीसिया को कैसे देखता है ? पौलुस के अनुसार वह हमें वर्तमान काल में अर्थात इस समय पवित्र लोगों के रूप में देखता है। वह यह नहीं कहता, ''भविष्य में मेरे एक या दो बच्चों को सेंट का दर्जा मिल सकता है।'' वह कहता है, ''मेरी कलीसिया के रूप में तुम सब सेंट या पवित्र लोग हो!''

एक दंतकथा के अनुसार, एक दिन मिचलेन्जलो की देखरेख में चल रही उसकी कार्यशाला में एक संगमरमर का पत्थर ले जाया जा रहा था। कर्मचारियों को उस भारी पत्थर को लापरवाही और बेदर्दी से ले जाते देख, मिचलेन्जलो उन पर चिल्लाया, ''उस ज़्लॉक को ध्यान से पकड़ो! उसमें एक स्वर्गदूत है!'' दिन भर के थके हुए श्रमिकों ने जिनके मन में पहले से ही अपना काम पूरा करने की बात थी, उसकी डांट की ओर ध्यान नहीं दिया। वह भाड़े पर लिए गए मजदूर जल्दी ही चले गए और शांत कार्यशाला में वह प्रधान मूर्तिकार और पत्थर ही अकेले रह गए। उस कौशल और कला से जिससे उसे युगों से प्रशंसा मिलती है, मिचलेन्जलो पत्थर के उस टुकड़े पर काम करने लग पड़ा। कई दिन के मापने और छेनी चलने, आकार देने और मुलायम करने के बाद, रेशमकोश में से निकलने वाली तितली की तरह उस पत्थर ने एक स्वर्गदूत का रूप ले लिया। इसकी विशेषताएं इतनी सजीव थीं कि ऐसा लगता था कि वह अभी बोल पड़ेगा या किसी भी क्षण उड़ जाएगा। मिचलेन्जलो ने पत्थर में से वह निकाला जो दर्शन की आंख से केवल उसी ने उसमें देखा था! उसने पत्थर के एक टुकड़े को स्वर्गदूत कहा और फिर उसे स्वर्गदूत बनाने के लिए काम पर लग गया।

हर मसीही परमेश्वर के पास एक पापी के रूप में ही आया था। हम वे पत्थर थे जो अप्रशिक्षित आत्मिक आंख को असहाय, आशाहीन, उद्देश्यरहित और व्यर्थ लगते थे। असली प्रधान मूर्तिकार ने हमें लेकर अपना निजी कार्य व्यज़्तिगत प्रोजेज़्ट बना लिया। *उसने यह नहीं देखा कि हम ज़्या थे, या हम कैसे थे, बल्कि यह देखा कि हम ज़्या बन सकते थे।* उसने हम में से हर एक में एक ''पवित्र जन'' देखा।

उसके साथ हमारी बातचीत होने पर, उसने हमें मसीह के लहू से धोया और हमें पवित्र लोग अर्थात सेंट कहने लगा। इस जीवन में यह पवित्र जन तैयार माल की तरह नहीं लगेगा; परन्तु परमेश्वर द्वारा हर रोज छीले जाने पर वह हमें वैसा बनाता रहता है जैसा वह हमें देखना चाहता है। सच्चाई तो यह है कि हमने अपने आप को उसकी इच्छा के आगे सौंप दिया है और हर रोज उसकी ईश्वरीय छेनी हम पर चलती है। अब हम पवित्र लोग हैं, और उसके रूप में पूरी तरह से ढलने की प्रक्रिया में उसकी उपस्थिति में रहते हुए और से और पवित्र होते जाएंगे, जो उसकी सेवा के लिए पूरी तरह से अलग किए गए हैं।

पवित्र जन शज़्द की अंतिम बात दो भागों के प्रश्न में है: पहली, ज़्या मैं पवित्र जन या सेंट बन गया हूं ? दूसरी यदि मैं पवित्र जन या सेंट हूं, तो ज़्या मेरा जीवन अपने नाम के अनुरूप है ?

पाद टिप्पणियां

[1]इन प्रारम्भिक कलीसियाओं के पास अगुआई के लिए नया नियम नहीं था, क्योंकि यह अभी पूरा नहीं हुआ था; इसलिए परमेश्वर ने आत्मा के आश्चर्यकर्मों के दान देकर उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया। पवित्र शास्त्र के इस भाग में दानों की दो सूचियां दी गई हैं (1 कुरिन्थियों 12:8-11; 12:28-30)। ये दान प्रेरितों के हाथ रखने से दिए जाते थे (प्रेरितों 8:14-17)। नया नियम पूरा हो जाने, अंतिम प्रेरित, और उस अंतिम व्यक्ति की जिस पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, मृत्यु हो जाने के बाद आश्चर्यकर्म करने के दान मिलने बन्द हो गए। आज हमारी अगुआई और स्थिरता के स्रोत के रूप में नया नियम हमारे पास है। [2]उनके पास आत्मा द्वारा दिए आश्चर्यकर्म के दान थे, परन्तु उन्हें मिले प्रकाशनों की घोषणा एक ही समय में दो लोगों के बोलने या एक के बोलते हुए दूसरे द्वारा बीच में अपने प्रकाशन को बताने के लिए नहीं बल्कि सुव्यवस्थित ढंग से बोलना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 14:27, 29)। स्त्रियों के सभा में बोलने से गड़बड़ी बढ़ रही होगी (1 कुरिन्थियों 14:34-36)। [3]स्तिफनुस ने कहा कि मिसर में पचहत्तर लोग गए थे (प्रेरितों 7:14)। पुराना नियम कहता है कि सत्तर लोग गए थे (उत्पत्ति 46:27; निर्गमन 1:5)। LXX अर्थात इब्रानी भाषा के पुराने नियम के यूनानी (या सप्तति) अनुवाद में, उत्पत्ति 46:27 में पचहत्तर लोग हैं। मनश्शै के पुत्रों, एप्रैम के दो पुत्रों और एप्रैम के पोते को मिलाकर पचहत्तर लोग ही बनते हैं। स्तिफनुस इसी [LXX] अनुवाद से बता रहा होगा। [4]इस्राएलियों के सीनै से जाने की तैयारी के समय गणना की गई थी (गिनती 3:11-51)। लेवियों की संख्या 22 हज़ार थी। मिसर से आने वाले पहलौठों की संख्या 22,273 थी। इनमें 273 का अन्तर था। 22 हज़ार लेवियों को पहलौठे की जगह अर्थात आदमी के लिए आदमी करके परमेश्वर की सेवा के लिए लाया गया था; शेष 273 को प्रत्येक को पांच-पांच शेकेल देकर छुड़ाया गया था। 1,365 शेकेल की यह राशि हारून और उसके पुत्रों को दी गई थी। [5]मसीह के फिर जाने वाले पवित्र जन या सेंट के लिए अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा नहीं है (1 कुरिन्थियों 9:27), परन्तु वह अभी भी उस परिवार के एक भटके हुए सदस्य के रूप में परमेश्वर के परिवार में होगा। पतरस ने संकेत दिया कि मसीह से गिरकर कोई पहले से भी बदतर स्थिति में जा सकता है (2 पतरस 2:20-22)।

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. एक उदाहरण दें कि वास्तव में संप्रेषण या संवाद करना कितना कठिन है?
2. नये नियम में ''पवित्र लोग'' शब्द का इस्तेमाल किस के लिए हुआ है?
3. पहली शताब्दी में आश्चर्यकर्म के दानों के इस्तेमाल की व्याख्या करें।
4. पवित्र आत्मा ने आश्चर्यकर्म के कितने दान दिए हैं?
5. *स्थिति में* पवित्र जन होने का क्या अर्थ है?
6. यदि किसी का व्यवहार पवित्र जन वाला नहीं है, तो क्या वह तब भी पवित्र जन ही है?
7. क्या नये नियम में ''पवित्र लोगों'' और ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल अदल-बदल कर हुआ है? यदि हां, तो कहां?
8. क्या पुराने नियम के लेखकों ने इस्राएल के लिए कभी ''पवित्र'' शब्द का इस्तेमाल किया? यदि हां तो कैसे?
9. याजकाई ठहराए जाने के विभिन्न चरणों पर चर्चा करें।
10. 1 पतरस 2:9 का ''पवित्र जन'' की अवधारणा से सम्बन्ध बताएं।
11. हमें इस शब्द को कैसे मानना चाहिए?
12. हमें अपने नाम के अनुसार कैसे जीना चाहिए?